लेखक–नवाँग जंगली

नवाँग की Tournament यात्रा

मेरा नाम नवाँग है। मैं काजा स्कूल में पढ़ती हूँ। हमारे स्कूल में हर साल tournament होता है। tournament हर साल अलग-अलग जगहों में होता है। इस बार Tabo में tournament रखा था। कुछ दिन तैयारी चली थी।

जिस दिन हमें Tabo जाना था उस दिन सारे बच्चे खुश थे पर कुछ तो डरे थे कि बस में उल्टी न आ जाए। एक बजे बस आ गई। सब बच्चे बस की ओर भागे। सब को अच्छी सीट चाहिए थी। बस में बहुत शोर-शराबा था। जाते समय यात्रा काफी अच्छी थी। Tabo पहुँचते ही सारे बच्चे बस से उतर गए और पेड़ों पर लगे खुरमानी और सेब खाने लगे। सेब पूरी तरह से पके नहीं थे लेकिन फिर भी बच्चे खा रहे थे।

गुरूजी ने कहा कि अब हम कमरा देखने जाएँगे। लड़कों का अलग कमरा था और लड़कियों का अलग। लड़कियों को तो सरकोंग स्कूल में ले गए जहाँ पर हमें दो कमरे दिए गए। लड़कियों की संख्या 100 के आस-पास थी। कमरे काफी छोटे थे; बड़ी मुश्किल से दोनो कमरों में लड़कियों को रहना पड़ा। उसके बाद हम छत पर गए। वहाँ से दूर-दूर तक सेब के पेड़ दिख रहे थे। हम छत पर 6 बजे तक बैठे। 7 बजे रात का भोजन तैयार हो गया। सभी ने अपनी थालियाँ निकाली और दो दीदीयों ने लाईन लगाई और कहा की लाईन में चलना, पर लड़कियों ने एक न सुनी। खाना अच्छा था। हमने खाना खा लिया और बर्तन धोने गए। काफी सारे नलके थे।

फिर हम वापस हमारे कमरे की तरफ बढ़े। थाली को बैग में रखकर हम सोने वाले थे तो मैडम ने कहा। "अब तुम सब सो जाओ कल जल्दी उठना होगा।" यह कहकर मैडम चली गई। हम सब सोने चले गए पर रात भर सो नहीं सके क्योंकि रात भर कीड़ों ने काटा। जब सुबह हुई तो मैंने अपनी पीठ देखी तो मैं बोली "नहीं"! मेरी पीठ पर किसने काट दिया।

पहला दिन

पहले दिन हमने गली-गली में जाकर नारे लगाए, स्वच्छ वातावरण के लिए; बहुत मजा आया। हमने जहाँ भी कूड़ा देखा वहाँ से उठा कर कूड़ेदान में फेंका। सफाई खत्म होने के बाद जूस दे रहे थे। कुछ बच्चे चलाक थे, दो बार जूस पी रहे थे। मैंने भी कई प्रकार के जूस पीए पर पीने में ज्यादा मज़ा नही आया क्योंकि जूस गर्म थे।

यह announce हुआ कि Senior लड़कों का कब्बड़ी होगी, वह भी Center Zone तथा Todh Zone के बीच। पहले तो Center Zone ने दो बार Todh Zone को हराया। तीसरा फाईनल था पर Todh Zone ने तीसरी बार Center Zone को हरा दिया। इस तरह Todh Zone कब्बड़ी मैच जीत गया। Center Zone को बहुत बुरा लगा। कब्बड़ी मैच खत्म होने के बाद खो-खो मैच था, Center Zone और Todh Zone के बीच। पहले कब्बड़ी मैच में Todh Zone ने Center Zone को हरा दिया था। इसका बदला Center Zone लेना चाहते थे तो उन्होने बहुत अच्छे से खेला और अपनी हार का बदला ले लिया। यह तो पहला दिन था। पहले दिन की रात के खाने के बाद culture programme होने वाला था जिसमें junior लड़कियों का डांस, बड़ी दीदीयों का group song तथा छोटी लड़कियों का solo song भी था। लड़कियाँ ही नहीं, लड़के भी डांस और solo song कर सकते थे। जब कार्यक्रम शुरू होने वाला था, सभी अपनी जगह पर बैठ गए। सभी के डांस बहुत अच्छे थे। रात का समय था इसलिए ठण्ड लग रही थी। कार्यक्रम खत्म होने के बाद हम सोने चले गए।

दूसरा दिन

दूसरे दिन की सुबह breakfast खा कर बच्चे कहीं पर जा रहे थे। पता चला कि वे तो दुकान की तरफ जा रहे थे। दूसरा दिन भी पूरा नही हुआ था और बच्चों को दुकान के बारे में पता चल गया। दुकान में काफी चीजें थी। वहाँ पर काफी दुकानें थीं पर जो दुकान थी उनमें सब्जी थी। पर एक दुकान में सारी मिठाई ₹5 की थी और बड़ी मीठी थी। अब हम ऊपर के दुकान में गए उसमें ठण्डी ice-cream भी थी। Ice-cream बहुत अच्छी थी। Ice-cream खाते ही दाँत में ठण्डक महसूस होती थी। दूसरे दिन कपड़े की दुकान भी लग गई। मुझे लगता है कि वे जगह-जगह पर जाकर कपड़े बेचते हैं।

दूसरे दिन भी कई खेल खेले गए, जिसमें कोई हारा और कोई जीता। अब marchpast में जो जीता उसकी announcement हो रही थी और विजेता Center Zone था। Lunch भी अब तैयार हो गया था-बच्चे अपनी थाली ला रहे थे। चाय भी काफी अच्छी थी। Lunch के बाद भी खेल खेले गए। अब शाम हो गई थी। हमें पता चला आज juniors का group song और नाटक भी था। हमने तैयारी की थी। रात का खाना खा कर कार्यक्रम शुरू होने वाला था। सभी अपनी जगह पर बैठ गए। ठण्ड भी लग रही थी। उसके बाद हम सोने चले गए। दूसरा दिन भी खत्म हो गया।

तीसरा दिन

तीसरे दिन जो बच्चे रेस और badminton खेलते हैं, उन्हे जल्दी से उठाकर ले गए। दूसरे बच्चे भी उठ गए और मुँह धोकर बैठ गए। Breakfast के बाद भी खेल भी खेले गए। खेल देखने में काफी मजा आया। हम काफी बार दुकान भी गए। Lunch खाने के बाद हमने फिर से जूस पिया। फिर हम अपने रूम की ओर चले गए। काफी सारी लड़कियाँ रूम में थी-कई सो रही थीं, कई खा रहीं थीं, कई बातें कर रही थीं। हम तो आते ही सो गए। शाम को हमारी नींद खुल गई। आज modeling show और भाषण था। बच्चे तैयारी कर रहे थे। रात का खाना खा कर कार्यक्रम शुरू हो गया। हम जल्दी सो गए। तीसरा दिन भी खत्म हो गया।

चौथा दिन

चौथे दिन मैडमों ने कहा था "अपना समान पैक कर दो हम कल चले जाएँगे"। थोड़ा दुख था, पर कोई बात नहीं। हमने अपना समान पैक कर दिया। गोम्पा के दर्शन भी कर लिया था। गोम्पा काफी बड़ा था। उसमें बगीचा लगा था, जिसमें सेब के पेड़ थे। वहाँ पर लामा भी थे कुछ छोटे लामा खेल रहे थे। बड़े लामा यहाँ-वहाँ घूम रहे थे। गोम्पा के बाहर डिजायन बना हुआ था। फिर हम वापस हमारे कमरे की तरफ आ गए थे। चौथे दिन कोई खास मेहमान आने वाले थे तो काफी तैयारी चल रही थी। स्नैक्स खाने के बाद हम दुकान गए हमने खाने की चीजें खरीदी और अपने बैग में डालीं। आज बच्चे खुश थे की वे कल अपने घर चले जाएँगे। जो खेल उन्होनें जीते उसका ईनाम भी मिलेगा और डांस होगा। 7:00 बजे रात का खाना खा लिया। बच्चों को ईनाम मिल गया फिर हम सोने चले गए। चौथा दिन भी खत्म हो गया।

पाँचवा दिन

पाँचवे दिन सब अपने बैग लेकर बाहर थे। Breakfast जल्दी मिल रहा था। जो दूर से आए थे, उन्हें जल्दी से breakfast दे रहे थे। सब देख रहे थे की उनकी बस आ रही थी। सारे बच्चे ice-cream खा रहे थे। बस आ गई तो सब बच्चे बस में बैठ गए और अपने-अपने घर चले गए।

लेखक-नवाँग जंगली

let's open a book

Let's Open a Book is working towards spreading the love of reading among Spitian children. To support us, write to us at teamloab@gmail.com